ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

मधु आचार्य 'आशावादी' के बाल उपन्यासों का तात्त्विक अनुशीलन

डॉ. अरविन्द कुमार दीक्षित, शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, श्री खुशालदास वि.वि. पीलीबंगा (हनुमानगढ़)
अखाराम चौधरी, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, श्री खुशालदास वि.वि. पीलीबंगा (हनुमानगढ़)

शोध सारांश

राजस्थान के हिन्दी साहित्य में बीकानेर की महती भूमिका रही है। बीकानेर के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों में दैनिक भास्कर, बीकानेर संस्करण के सम्पादक श्री मधु आचार्य 'आषावादी' ने हिन्दी एवं राजस्थानी में उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, बाल साहित्य एवं अन्य विधाओं में शताधिक पुस्तकों का योगदान दिया है।

आपने बाल कविताओं, बाल कहानियों के अतिरिक्त हिन्दी में 5 और राजस्थानी में 2 बाल उपन्यासों के द्वारा बाल साहित्य भण्डार की श्रीवृद्धि की है। मधु आचार्य के बाल उपन्यासों की कथावस्तु अत्यंत स्वाभाविक और हृदयस्पर्षी है। इनके बाल पात्रों की जीवटता देखते ही बनती है। इन उपन्यासों के संवादों में बाल मनोविज्ञान का सटीक निरूपण देखा जा सकता है। उपन्यासकार ने बालमन के अन्दर गहराई तक झांकते कथानक के अनुरूप समुचित वातावरण का उल्लेख करते हुए बाल पाठकों तक अपने रचनाकर्म के उद्देष्य को सहज संप्रेषित करने में सफलता पाई है। मधु आचार्य के बाल उपन्यासों की भाषा सहज, सरल एवं विविधात्मकता लिए हुए है जिसे अनूठे षिल्प प्रयोगों और शैलीविधान के द्वारा इतना पठनीय बना दिया है कि बच्चे ही नहीं अपितु बड़े बूढ़े भी एक बार शुरू करके इन बाल उपन्यासों को पूरा पढ़े बिना नहीं रह पाते हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में मधु आचार्य के बाल उपन्यासों के तात्त्विक अनुषीलन का प्रयत्न किया गया है।

कुंजी शब्द – सलीब, गुल्लक, शोहरत, चींटी, सपना, पार्वती, भंवर, साइट, रिजल्ट, इन्हेलर, अस्थमा, बादाम, मितव्ययिता

<u>हिन्दी बाल उपन्यास</u> :–

बच्चे देष का नौनिहाल है। देष के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए बच्चों की समझ में आने लायक सहज बोधगम्य साहित्य की जरूरत है, क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है। जैसा समाज होगा साहित्य भी वैसा प्रतीत होता हुआ दिखाई देगा। वस्तुतः साहित्य समाज की वह धारा है जिससे व्यक्ति को जीने की राह मिलती है। साहित्य का उद्भव मूलतः मौखिक रूप में हुआ। कहने और सुनने के इस प्रवाह में बाल साहित्य भी लोकजीवन सरिता में हिलोरें लेता उत्पन्न हुआ है, लेकिन लोक साहित्य के रूप में इस बाल साहित्य की अभी तक उपेक्षा की जाती रही है तथा उसे दोयम दर्जे का साहित्य माना गया। बाल साहित्य के प्रारम्भ में मौखिक रूप में दादा–दादी, नाना–नानी, मौसा–मौसी, चाचा–चाची और बुआ द्वारा बच्चों को भूत, प्रेतों, राजा–रानी, परियों और तिलिस्म रूपी कथा सुनाकर बच्चों का मनोरंजन करने के साथ–साथ बच्चों के भीतर संस्कार एवं सद्गुण पनपाने का प्रयास किया जाता था। चूँकि बाल साहित्य का उद्भव इन्हीं प्रसिद्ध बाल कहानियों से माना जाता है, जिनका मौखिक स्वरूप आदिकाल से प्रचलन में रहा है। ये कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी दादी–नानी द्वारा मौखिक रूप में ही हस्तान्तरित होती रही है। आज मुद्रित साहित्य के सन्दर्भ में परिस्थितियाँ बदल गई है।

बाल साहित्य दो शब्दों से मिलकर बना है– 'बाल' और 'साहित्य'। जिसका अर्थ होता है– बच्चों का साहित्य। यानी बालकों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य। बाल साहित्य के अर्थ पर विचार करते हुए डॉ. सुरेन्द्र विक्रम तथा जवाहर इंदु ने कहा है, ''बाल मनोविज्ञान बाल साहित्य लेखन की एक कसौटी है। बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नही ंकर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वष की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लिखने के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेष वाली है।

राजस्थान में बाल कथा साहित्य लेखक के रूप में चौथे दषक में शंभूदयाल सक्सेना का योगदान रहा लेकिन बाल कहानियों की प्रथम पुस्तक दौलतसिंह लोढ़ा (भीलवाड़ा) द्वारा 'बुद्धि का लाल' (1942) में प्रकाषित हुई, जिसमें सात बाल कहानियाँ थी। उन्होंने 'चतुर चोर' तथा 'सट्टे के खिलाड़ी' पुस्तकों में अनेक बाल एकांकी भी प्रकाषित किए। अतः उन्हें राजस्थान में हिन्दी बाल साहित्य का पुरोधा कहा गया है। स्वाधीनतापूर्व राजस्थान में 'बालहित' (उदयपुर) एवं 'वानर' (जयपुर) बाल पत्रिकाएं प्रकाषित हुई। आजादी के उपरान्त बालहंस (राजस्थान पत्रिका) एवं बाल भास्कर (दैनिक भास्कर) ने बाल साहित्य को प्रोत्साहन दिया है। 'साहित्य गुंजन', 'मधुमती' एवं 'जागती जोत' पत्रिकाओं के बाल साहित्य विषेषांकों में भी बाल कथाएं प्रकाषित हुई है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने बाल कथा साहित्य की 36 पुस्तकें प्रकाषित की।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

बाल कथा साहित्य सृजन के क्षेत्र में पद्मश्री डॉ. उषा यादव ने प्रचुर योगदान दिया है। उनके बाल उपन्यास 'जंगल में मोर नाचा' को अनेक राज्य स्तरीय पुरस्कार मिले हैं। यह उल्लेखनीय है कि बाल कथा साहित्य में राजस्थान प्रदेष के बाल कथाकारों की रचना को बाल पाठकों तक पहुँचाने के लिए जयपुर से 'बालहंस' पत्रिका के प्रकाषन ने अस्सी एवं नब्बे के दषक में क्रान्ति पैदा की। इन दषकों में लिखी गई बाल कहानियों एवं उपन्यासों में मेहनत, मित्रों से वफादारी, बालक में आज्ञापालन, परिश्रम, साहस, दैनिक जीवन से जुड़ी बातों से बुद्धि का विकास, परिवेष, सत्य, सदाचार के साथ ही बालकों को पढ़ने के लिए प्रेरणा के साथ ही उनकी जिज्ञासाओं से जुड़ी अनेक साहसपूर्ण विषेष घटनाएँ मिलती है। इन दषकों में बालकों में वैज्ञानिक सोच पैदा करने के लिए बाल कथाकारों ने अपनी मौलिक एवं अनूदित कहानियों में विज्ञान जगत् से जुड़े हुए हवाई जहाज, चन्द्रमा, अन्तरिक्ष, पनडुब्बियाँ, द्वीपों, महाद्वीपों की खोज, विभिन्न ग्रहों आदि के सामयिक घटनाओं का प्रभाव, वृक्षारोपण, षिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संकट एवं सन्तुलन के प्रति सोच उत्पन्न करना, बिजली, पानी एवं राजनीति जैसे विषय मिलते हैं। डॉ. विमला भण्डारी के जासूसी बाल उपन्यास 'दी ऑरबिट आई मंजू रानी और मूर्ति चोर' में जंगल की आग वाली घटना में बच्चों में पर्यावरण के प्रति सोच उत्पन्न की गई है। ''नहीं मैडम जी, हमारे जंगल को किसी की नजर लग गयी है। यह आप जितनी भी हरियाली देख रही हैं, वह सिर्फ सड़क के किनारे तक ही है। अन्दर का जंगल वीरान पड़ा है। अब तो यहाँ आए दिन आग लग जाती है।''

इसी प्रकार समय–समय पर अनेक बाल साहित्यकारों ने बाल कहानियों एवं बाल उपन्यासों के द्वारा राजस्थान के हिन्दी बाल साहित्य का भण्डार सुसमृद्ध बनाया है। समीक्ष्य साहित्यकार मधु आचार्य 'आषावादी' ने भी बाल कविताओं एवं बाल कहानियों के अलावा पाँच हिन्दी बाल उपन्यास एवं दो राजस्थानी बाल उपन्यास का योगदान दिया है।

इन बाल उपन्यासों का तात्त्विक अनुषीलन करते हुए हम मधु आचार्य की नवाचारपूर्ण 'बाल–दृष्टि' को समझने का प्रयत्न करेंगे। ये बाल उपन्यास है–

1. अपना होता सपना (2016)
2. चींटी से पर्वत बनी पार्वती (2016)
3. शेखर की शोहरत (2020)
4. उम्र से आगे (2017)
5. सीमा सलीब पर (2019)
6. गुल्लू की गुल्लक (2018)
7. वीर की वीरता (2021)

<u>बाल उपन्यासों की कथावस्तु :–</u>

बाल साहित्य के फलक पर मधु आचार्य की रचनाओं में बालजीवन का सतरंगी ब्यौरा स्पष्ट झलकता है। बाल उपन्यासों की कथावस्तु नैसर्गिक रूप से बाल जीवन के सुखः दुःख की अनुभूतियों एवं परिवानजन के द्वारा बच्चों के प्रति व्यवहार के बारे में ही रची–बुनी गई है।

'अपना होता सपना' ऐसा बाल उपन्यास है जिसका शीर्षक ही कौतूहल जगाता है कि सपना क्या है? लेखक किस सपने की बात करता है? और वह 'सपना' अपना कैसे हो जाता है? एक उपन्यास की कथावस्तु में मौलिकता होना लाजिमी है और यह उपन्यास इस दृष्टि से मौलिक है क्योंकि सब लोग रूढ़ अर्थों में सपने का ज्यादातर झूठ ही मानते है। उपन्यासकार की मौलिकता इस बात में है कि वह दर्षा देता है– ''खुली आँख से देखे गए सपने ही वास्तविक सपने होते हैं।'' उपन्यास का बाल–पात्र नितिन यह समझ गया है। उसके बालमन के समक्ष यह सपना जीवन में कुछ आगे बढ़कर, कुछ कर दिखाने का जज्बा जाग्रत करता है।

'चींटी से पर्वत बनी पार्वती' बाल उपन्यास में सामान्य परिवार की कथावस्तु है। एक अस्थमा पीड़ित सरकारी कर्मचारी की इकलौती बेटी पार्वती छोटी उम्र में होते हुए भी पिता के सपने को पूरा करने का बड़ा सपना देखती है। गरीब पिता अपनी बीमारी के बावजूद भी दवाइयों की कमी से त्रस्त है। उसका खाली 'इन्हेलर' (ष्वसन उपकरण) देखकर नन्हीं पार्वती बहुत चिंता करती है। पिता की अकाल मृत्यु के बाद भी यह नन्हीं लड़की चींटी की तरह अथक मेहनत करके पूरे घर का भार संभाल लेती है। लगन–मेहनत और हिम्मत के द्वारा वह उच्च षिक्षा एवं पद प्राप्त करती है। कथाकार ने चींटी की–सी मेहनत और सफलता के लिए षिखर–सा पर्वत दोनों ही प्रतीक काम में लिए हैं।

'षेखर की शोहरत' उपन्यास में गरीब किसान दम्पति हरिया और रूपा को शादी के कई वर्षों बाद पुत्र–प्राप्ति हुई लेकिन पुत्र शेखर के हाथ जन्म से ही छोटे होने के कारण माँ रूपा दुःखी रहती थी। शेखर अपनी दादी से अच्छे संस्कार ग्रहण करता है और दादी के मरने के बाद भी वादे के अनुसार भरपूर

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

पढ़ाई करता है। वह दसवीं बोर्ड की परीक्षा में मेरिट में प्रथम स्थान अर्जित करता है। पूरे गांव में खुषी की लहर छा जाती है।

'उम्र से आगे' बाल उपन्यास में दो कथानक परस्पर गुंफित है। बालक भंवर एक अनजान वृद्ध किसान रामलाल के बेहोष होकर गिर जाने के बाद डॉक्टर को बुलाता है, अपने घर से लाकर खाना खिलाता है। भंवर के सेवा भाव को देखकर पिता हरदयाल भी उस वृद्ध को रात में घर पर ठहराते हैं। पता चलता है कि जिसे बेटे के पढ़ने के लिए वृद्ध ने कर्जा लिया था, उसी निकम्मे बेटे ने नौकरी लगते ही वृद्ध रामलाल को प्रताड़ित कर निकाल दिया था। इधर एक हादसे में भंवर के पिता की टांगें कट जाती है। किषोरावस्था में ही भंवर अपने घर का खर्चा चलाने के लिए मजदूरी करते हुए पढ़कर मैरिट में दूसरा स्थान हासिल करता है। उपन्यास का अन्त सुखद है। इस प्रकार उपन्यासकार ने कथावस्तु का सुन्दर संयोजन किया है। घटनाओं का पूर्वापर संबंध औचित्यपूर्ण ही है और पाठक इसे 'सिंगल सीटिंग' में पूरा पढ़े बिना नहीं रह पाएंगे।

'सीमा सलीब पर' उपन्यास में बालिका सीमा अपने निर्धन माँ–बाप की आर्थिक सहायता हेतु पढ़ाई के साथ ही साथ घरेलू मजदूरी करती है। वह पढ़–लिख कर वकील बनती है और अपने वंचित पिता को पैतृक जायदाद में वाजिब हिस्सा दिलवाती है, लेकिन पारिवारिक मर्यादा के चलते जालसाज ताऊजी को सजा नहीं करवाती है। यह उपन्यास बालकों में षिक्षा की महत्ता के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों के प्रति सजग बनाता है।

'गुल्लू री गुल्लक' उपन्यास में कक्षा में चित्रकला की प्रतियोगिता में गुल्लू द्वारा एक गुल्लक का चित्र बनाने से लेकर कहानी आगे बढ़ती है। मास्टरजी अल्प बचत का पाठ पढ़ाते हैं। गुल्लू अपने मित्र रामू की आर्थिक मदद करता है। धीरे–धीरे सभी बच्चे मिलकर गिरवी रखे हुए खेत को वापिस मालिक को दिलवा देते हैं।

'वीर की वीरता' उपन्यास में बालक वीर अपनी सूझबूझ से कोरोना जैसी महामारी के दौर में मास्क पहनने और अन्य सतर्कताओं का प्रचार–प्रसार करता है, उसके मित्र भी सहयोग करते हैं। कहना ही होगा कि मधु आचार्य ने विभिन्न बाल उपन्यासों में साधारण–सी बात को नये मौलिक ढंग से कथावस्तु के रूप में ढालने में कामयाबी हासिल की है।

बाल उपन्यासों में चरित्र चित्रण (पात्र योजना) :–

बाल उपन्यासों में बाल पात्रों का सहज बाल सुलभ चरित्र–चित्रण करना मधु आचार्य के निष्णात बाल साहित्यकार होने का पुष्ट प्रमाण है। इनकी बाल कहानियों में भी प्रेरणास्पद बाल पात्रों का प्राचुर्य है। 'तोल मोल कर बोल' कहानी में एक आत्मकेन्द्रित बालक माँ–बाप के प्रति गुस्सा जताकर भले ही घर से बिना बताए बाहर निकल जाता है, लेकिन बाहर जाने पर पहले तो पुलिसिया पूछताछ और फिर गुण्डों के चंगुल में फंसकर उसे घर का महत्त्व मालूम होता है। इसी प्रकार मधु आचार्य ने बाल पात्रों का स्वाभाविक चित्रण उपन्यासों में भी किया है।

बाल उपन्यास 'अपना होता सपना' में कथा नायक बालक नितिन एक लगनषील पात्र है। वह संस्कारवान है और उसने जीवन में कभी सच्चाई का साथ नहीं छोड़ा। वह मितव्ययी है और दूरदर्षी भी है। बच्चे भगवान का रूप होते हैं और अगर उनकी लगन सच्ची हो तो उन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। वह सपना तो देखता है, मगर खुली आँखों से देखता है। यही वजह है कि लगन के बल पर वह अपने सपने को 'अपना' (सच्चा) कर पाता है।

दूसरे बाल उपन्यास 'चींटी से पर्वत बनी पार्वती' में नन्हीं सी इकलौती बिटिया अपने पिता के प्रति अगाध सम्मान रखती है। पैसों के अभाव में गरीब पिता 'अस्थमा' (सांस रोग) में भी नए 'इन्हेलर' (सांस लेने का उपकरण) के बिना मर जाता है। पार्वती बीमार पिता के लिए सदैव चिन्तित रही और पिता के मरणोपरान्त उसने हिम्मत जुटाकर घर–परिवार का बोझ संभाला। ऐसी प्रेरणादायिनी बालिकाएं बिखरे हुए घरों को संवार देती है। एक बालिका के मन की यह गहरी मर्मगाथा है।

इन हिम्मती पात्रों की ही भांति 'असंभव भी है संभव' शीर्षक बालकहानी में मूर्तियाँ बेचने वाले गरीब मजदूर के निधनोपरान्त अल्पायु बालक मनोज अपने परिवार को संभालता हुआ जीवन में आगे बढ़ता है।

'षेखर की शोहरत' उपन्यास में जन्मजात छोटे हाथों वाला शेखर पाँच वर्ष की आयु में ही मेहनत का महत्त्व सीखकर दादी को दिए वादे के मुताबिक जमकर पढ़ाई करता है। वह अपनी माँ के प्रति कभी कहीं पर झल्लाहट नहीं दर्षाता है, बल्कि माँ की उदासी को दूर करने के उपाय करता है। वह परीक्षा के दिनों में भी आराम करता है क्योंकि उसने पहले पढ़ाई कर रखी है। वह परीक्षा की चिन्ता में होने वाले बुखार

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

'एक्जाम फीवर' जैसी निराषा से कोसों दूर है। उसका आत्मविष्वास गहरा है। बोर्ड परीक्षा के रिजल्ट के दिन भी वह सहजभाव से व्यवहार दर्षाता है। मैरिट में प्रथम स्थान पाने पर वह इसका श्रेय माँ–बाप, दादी और मास्टरजी को देता है। उपन्यासकार ने 'षेखर' के रूप में दिव्यांगता से जूझते बच्चे की यथार्थ व्यथा से उबरकर षिखर छूने का प्रेरक चरित्र–चित्रण किया है।

'उम्र से आगे' उपन्यास में मुख्यतया किषोर भंवर की सेवाभावना, घर के प्रति जिम्मेदारी और पढ़ाई में गहरी रुचि पर प्रकाष डाला गया है तथापि बालक भंवर के अन्य साथियों को भी गौण पात्र के रूप में देखा जा सकता है। बालक भंवर विकलांग पिता के प्रति सेवाभाव रखता है तो अनजान वृद्ध के बेहोष होकर गिरने पर उसकी भी खातिरदारी करता है। वह चाचा के साथ टैक्सी चलाकर कमाई करता है, बोर्ड परीक्षा में मैरिट में दूसरा स्थान प्राप्त करता है। वह अपनी बड़ी बहन से अगाध स्नेह रखने वाला भाई है। उसे भजनभाव पूजापाठ में गहरी दिलचस्पी है। उपन्यासकार ने एक आज्ञाकारी सेवाभावी बालक के तौर पर 'भंवर' का आदर्ष चरित्र–चित्रण किया है।

'सीमा सलीब पर' बाल उपन्यास की नन्ही बिटिया सीमा गरीब होते हुए भी मांगकर नहीं खाती है। वह अपने माता–पिता की आमदनी बढ़ाने के लिए माँ के साथ घर पर ही बादाम छीलने की मजदूरी करती है, फिर भी पढ़ाई पूरी करती हुए वकालात की डिग्री में गोल्ड मैडल प्राप्त करती है। बचपन से ही वह माँ–बाप के अच्छे गुणों को ग्रहण कर चुकी है, इसलिए मुकदमा जीतने पर भी अपने ताऊजी को जायदाद की जालसाजी में सजा नहीं दिलाती है। बचपन में ही उसके तर्क अकाट्य है, लेकिन वह हठ नहीं करती है, भले ही 'हक' के लिए लड़ रही है।

'गुल्लू री गुल्लक' उपन्यास में भी बालक वीर के अलावा उसके बाल सहपाठियों के कर्मठ चरित्रों की सृष्टि की गई है। ये उपन्यास बच्चों में सांगठनिक शक्ति का महत्त्वभाव जगाते हैं।

समग्रतः कहें तो मधु आचार्य के सभी बाल उपन्यासों के बाल पात्र अपने अपने ढंग से आदर्ष चरित्र का निरूपण करने में सफल हुए हैं।

बाल उपन्यासों में कथोपकथन (संवाद योजना) :–

मधु आचार्य 'आषावादी' ने अपने बाल उपन्यासों में बाल पात्रों एवं वयस्क पात्रों के मध्य सहज–स्वाभाविक संवादों का प्रयोग किया है। 'चींटी से पर्वत बनी पार्वती' बाल उपन्यास में छोटे–छोटे संवादों द्वारा कथा को आगे बढ़ाते हुए उपन्यासकार बड़ी सहजता से बाल पाठकों के मन को छू जाता है। 'अपना होता सपना' उपन्यास में भी सहज–सरल प्रवाहमयी भाषा पाठकों को बांधे रखती है।

'षेखर की शोहरत' उपन्यास में छोटे हाथों की दिव्यांगता से ग्रस्त नन्हे शेखर और माँ के बीच मर्मस्पर्षी संवाद मिलते हैं। यहां एक संवाद द्रष्टव्य है–

''माँ को शेखर की इस बात पर मन ही मन रोना आता। पर इस बात की खुषी भी होती यह बच्चा अपने को अभी से स्वावलम्बी बना रहा है। ताकि आगे जाकर यह कमी उसके लिए अभिषाप ना बने। आखिरकार तो उसे ही अपना जीवन जीना था। यह सोचकर माँ अपने आंसू पोंछ लेती।

– ''माँ तुमसे एक बात कहूं।

– बोलो, शेखर।

– आज के बाद कभी रोना मत।

– क्यों बेटा। रोना आ जाता है।

– तुम रोओगी तो मैं कमजोर हो जाऊंगा। क्या तुम चाहोगी कि हाथों के साथ मैं मन से भी कमजोर हो जाऊं।

– कभी नहीं, आज के बाद कभी नहीं रोऊंगी।

– शेखर मंद मंद मुस्कुराया। रूपा को भी हंसी आ गई।'' (पृ. 32)

'उम्र से आगे' बाल उपन्यास में हादसे के दौरान टांगे गंवा चुके नाई हरदयाल का 14 वर्षीय बेटा भंवर अपनी माँ को दिलासा देता है। माँ–बेटे का यह संवाद कितना मर्मस्पर्षी है–

– ''तुझे मुझ पर भरोसा नहीं है क्या?

– पूरा भरोसा है।

– फिर वादा करने में संकोच क्यों कर रही है।

– तेरे पिता के साथ हुए हादसे के बाद अब तो मन में एक डर बैठ गया है, इसलिए कुछ भी बोलने से पहले सोचती हूँ।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

– सच बोलने से डरना नहीं चाहिए, इससे तो हम मजबूत होते हैं। माँ इस बात पर भंवर का चेहरा देखने लगी।
– तूं तो आजकल बड़े लोगों जैसी बातें करने लगा है।
– आदमी बड़ा या तो उम्र लेकर होता है या अनुभव। मुझे तो 14 साल की उम्र में ही इतने अनुभव मिल गए, अब बड़ा बनना मजबूरी हो गया। माँ इस जवाब पर चुप हो गई। बड़ी खरी बात कही थी बेटे ने।
– तूं इधर–उधर की बातों को छोड़, कहना क्या चाहता है?
– सच्ची और सीधी बात कह रहा हूँ, सहन तो कर लोगी।
– तेरी कोई बात मुझे पीड़ा नहीं पहुँचाती। तूं पहले यह रोटी ले।
यह कहकर उसने एक गर्म रोटी भंवर की थाली में डाल दी।
– तेरे हाथ की रोटी खाकर असीम आनन्द मिलता है।
– तूं आजकल बातें बहुत बनाने लग गया है।
– अच्छा, तूं कहे तो मैं चुप रहना शुरू कर दूं।
– चुप मैं ही ठीक हूं। तूं तो मन की हर बात बोला कर।
– इसका मतलब यह हुआ कि मैं अपने मन की बात कह सकता हूँ। तुम बुरा भी नहीं मानोगी।'' (पृ. 45)
'सीमा सलीब पर' उपन्यास में छोटी–सी लड़की सीमा अपनी तर्क बुद्धि से माँ को अपने काम में सहभागी बनाने के लिए विवष कर देती है। बालबुद्धि की समझदारी का यह संवाद द्रष्टव्य है–
– ''स्कूल से आने के बाद हम दोनों साथ–साथ छीलेंगे। जब दो लोग हो गए हैं तो बादाम भी तो डबल होने चाहिए।
– पर तूं यह काम क्यों करेगी।
– क्यों नहीं करूंगी? तेरी तरह मेरे दो हाथ नहीं क्या?
– पर दोपहर में तूं स्कूल से थककर आती है। तुझे आराम करना जरूरी है।
– माँ, आराम हराम है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह नारा तुम्हें याद नहीं क्या?
– वो बात बड़ों पर लागू होती है। तूं बच्ची है।
– कमाल करती हो।
– कैसा कमाल?
– सुबह ही तो तुमने माना कि मैं अब बड़ी हो गई हूँ।
– माँ चुप हो गई। सीमा के तर्क उसे प्रायः निरुत्तर कर देते थे।
– बड़ी हो गई, यह मैं भी जानती हूँ।
– पर काम करने जितनी बड़ी नहीं हुई।
– काम तो करूंगी तब तुम्हें पता चलेगा ना।
– तुम काम करना क्यों चाहती हो?
सीमा चुप हो गई। कुछ सोचकर बोली–
– तुम शर्त मान रही हो ना? पहले हां कहो, उसके बाद बात बताऊंगी।
– तेरी शर्त मंजूर है।
– यह हुई ना बात।
– अब तो काम करने का कारण बताओ।
सीमा अब गम्भीर हो गई।
– माँ, मैं घर की आर्थिक स्थिति जानती हूँ। हम जैसे तैसे गुजारा कर रहे हैं। तुमने अब बादाम का खर्च भी बढ़ा लिया।'' (पृ. 32)
'गुल्लू री गुल्लक' उपन्यास में अनेक सहपाठियों के बीच 'गुल्लू' द्वारा अपनी बचत के लिए गुल्लक की चर्चा के संवाद अत्यन्त रोचक बन पड़े है। इस राजस्थानी उपन्यास में बच्चों की मातृभाषा (मायड़भाषा) के सरस संवाद सीधे ही हृदय को छू जाते हैं। बच्चों की गहरी आर्थिक सोच का एक उदाहरण निम्न संवाद में मिल जाता है–
''दोनूं उठग्या। चालण लाग्या तद गुल्लू हाथ आगै कर र रामू नैं रोक लियो।
– अबै कांई हुयग्यो?
– रामू, थूं ओकर फेरूं सोच लै।
– कांई?

– थारा पापा मास्टर है स्हैर मांय। जे उणां नैं ठा पड़ी तो बै रीसां बळैला। थनैं गांव सूं आपरै सागै स्हैर लेय जावैला। धिंगाणै आपां रो सागो छूट जावैला। म्हैं आ नीं चावूं।
– थूं यार फालतू री बात सोचै।
– आपां नैं कोई अैड़ो काम नी करणो चाईजै, जको आपां रै घरआळां नैं ठा नीं हुवै। म्हारै तो पापा नीं है। जे हुंवता तो उणां नैं जरूर पूछतो।
– पापा हुंवता तो थनैं ओ काम ई नीं करणो पड़तो। इण सूं भी मोटी बात आ कै थारो खेत अडाणै ई नीं जावतो।'' (पृ. 30)

'वीर री वीरता' उपन्यास में बाल मंडली कोरोना महामारी के दौर में विस्थापित पैदल यात्रियों के लिए भोजन पानी की व्यवस्था करती है। एक वृद्ध व्यक्ति और बालक 'वीर' का यह संवाद कितना मर्मभेदी है–
– ''पाय लागूं। कठै सूं आया?
– बेटा, घणा लारै सूं आया। घणो दूर तांई जावणो है।
– ओऽहो! अठै कियां?
– अबै सरीर मांय सत नीं रैयो। चालीजणो बंद हुयग्यो।
– क्यूं?
– नीं तो पाणी है अर नीं रोटी है।
– भूखा हो कांई?
– दो दिन सूं भूखां हां। लारै घणोई सोध्यो पण जीमण री सेवा नीं मिली।
– जणै चाल्या क्यूं? सरीर तोड़ लियो थां।
– बेटा, गांव पूगणो चावां। बठै जीवण रो तो कीं जतन हुसी। अर जे मरसां तो आपरी माटी मांय तो मरसां।
– इण तरै री बात ना सोचो।
– अैड़ी महामारी तो म्हे म्हारी जूण मांय नीं देखी। हारग्या इणसूं।'' (पृ. 38)

इसी प्रकार विभिन्न बाल उपन्यासों में कथाकार ने बालसुलभ सहज भाषा में सरस सुबोध संवाद योजना का उपयोग किया है।

बाल उपन्यासों में वातावरण (देषकाल, परिवेष) :–

मधु आचार्य ने अपने बाल उपन्यासों में बाल पात्रों के अनुरूप ही वातावरण का निरूपण किया है। 'चींटी से पर्वत बनी पार्वती' बाल उपन्यास में सरकारी कर्मचारी होते हुए भी अस्थमा पीड़ित पिता अपनी इकलौती बिटिया की पढ़ाई का खर्चा नहीं उठा पाता है। उसका 'इन्हेलर' भी खाली रहता है जिससे उसे सांस लेने में परेषानी होती है। उपन्यासकार ने भले ही आर्थिक संकट के कारणों का अधिक ब्यौरा नहीं दिया है तथापि कथावस्तु के अनुरूप खाली 'इन्हेलर' और सांस की कठिनाई से व्यथित पिता का चित्रण घर की गरीबी का वातावरण दर्षाने में समर्थ है। इसी प्रकार उपन्यास में पार्वती के घर की स्थिति का मार्मिक चित्रण करने के लिए लेखक ने यथाप्रसंग संगत वातावरण का उल्लेख किया है।

'अपना होता सपना' बाल उपन्यास में लेखक ने सरल–सहज प्रवाहमयी भाषा में नायक नितिन के सपने का उल्लेख करने में बाल मनोविज्ञान को आधार बनाया है। उपन्यास में नितिन की मितव्ययिता और दूरदर्षिता के समर्थन में समुचित परिस्थितियों का चित्रण किया गया है।

'षेखर की शोहरत' उपन्यास में बालक शेखर के जन्म के समय घर भर में खुषी के वातावरण का दृष्य लेखक ने कुछ यूं चित्रित किया है–

''गांव की रीत के अनुसार हर आदमी और औरतों ने बच्चे को उपहार दिया। हरिया का घर सामान से भर गया। उसी दिन शाम को गांव वालों के लिए भोजन का प्रबंध हुआ। गांव में रहने वाला हर व्यक्ति उस दिन हरिया के घर के आया। चाहे बच्चा हो या बूढ़ा सभी चाव से आए। पूरा गांव खुष था। गांव वालों की गोद में बच्चा जाता तो मुस्कुरा देता। सब एक–एक बार बच्चे को अपनी गोद में लेने की चाह में थे। बच्चे को सभी ने खिलाया। माँ उस दिन बहुत खुष थी। रूपा घर आ गई थी ना। उसे लगा घर की रौनक वापस लौट आई। रूपा भी पूरे गांव का स्नेह पाकर बहुत खुष थी।'' (पृ. 30)

इसी तरह उपन्यास में परीक्षा के दिनों के वातावरण और रिजल्ट आने के दिन शेखर के मैरिट में आने के खुषी भरे माहौल का सजीव चित्रण देखते ही बनता है। ऐसे चित्ताकर्षक वातावरण को पढ़कर कोई भी बाल पाठक स्वयं प्रेरणा से ओतप्रोत होना स्वाभाविक है।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

'उम्र से आगे' बाल उपन्यास में बालक भंवर अपने चाचा के साथ टैक्सी चलाता है, अपने विकलांग पिता के दवा पानी का खर्च उठाता है फिर भी बोर्ड परीक्षा में मैरिट में स्थान बना लेता है। उसके रिजल्ट के बारे में सुनकर मुंह मीठा करवाने के लिए भंवर के पिता और माँ का यह वार्तालाप घर की गरीबी के वातावरण का चित्रण करता है–

''– घर में गुड़ तो होगा ना।

– हां, है।

– गणेषजी के चढ़ाओ और इसको भी खिलाओ।

माँ भागी–भागी भीतर गई। रसोई से गुड़ लिया और मंदिर में जाकर चढ़ाया। वापस कमरे में आई। थोड़ा टुकड़ा तोड़कर भंवर के पिताजी को दिया। उन्होंने वो टुकड़ा भंवर को खिलाया। फिर माँ ने भी टुकड़ा खिलाया।'' (पृ. 58)

इस प्रकार के वातावरण चित्रण से भारतीय ग्रामीण परिवेष साकार हो उठा है।

'सीमा सलीब पर' बाल उपन्यास में नन्हीं बालिका सीमा अपनी माँ को घर पर ही मजदूरी करते समय बादाम छीलने के काम में हाथ बंटा कर आमदनी बढ़ाने का प्रस्ताव रखती है। तदुपरान्त भावुकता का जो वातावरण बनता है, वह तो देखते ही बनता है–

''यह खर्च यदि वहन होगा जब घर की आय बढ़ेगी। इस बारे में सोचना भी जरूरी है। तुम काम केवल बादाम छीलने का करती हो तो यही काम करना होगा। ज्यादा तभी होगा जब मैं भी मदद करूं। इसी कारण मैंने तुमसे डबल बादाम लाने के लिए कहा।

माँ की आँखें गीली हो गई। आँखों में आया पानी साफ नजर आ रहा था। चेहरे पर एक गर्व भी था। वो एकटक सीमा को देख रही थी। छोटी और प्यारी सीमा ने कितनी बड़ी बात कही थी। कितनी समझदारी की बात कही थी।। उस बात से ही उसकी आँखों में पानी आ गया था।

सीमा भी माँ की गीली आँखों को देख रही थी। माँ के चेहरे के भावों को बहुत ही गौर से पढ़ रही थी। वो आगे बढ़ी और अपने छोटे–छोटे हाथों से उसने माँ की आँखों का पानी पोंछना शुरू कर दिया। माँ ने उसे गले लगा लिया। थोड़ी देर गले लगने के बाद सीमा अलग हो गई। माँ के सामने आकर खड़ी हो गई।

माँ एकटक उसे देख रही थी। सीमा की उससे नजरें मिली तो सीमा की नजरें भी झुक गई। सीमा को माँ ने कहा–

– मेरी प्यारी और भोली बेटी कितनी बड़ी बातें करती है।

– सब तुमसे ही सीखा है माँ। तुम कितनी मेहनत करती हो। पापा भी काम करते हैं। तब जाकर घर का खर्चा चलता है।'' (पृ. 33)

'गुल्लू री गुल्लक' राजस्थानी बाल उपन्यास में लेखक ने अल्प बचत के पाठ सिखाने की प्रक्रिया में मास्टरजी की नवाचारी सोच के साथ वातावरण निर्माण किया है। मास्टरजी सभी बच्चों को अपने मन मुताबिक चित्र बनाकर लाने का गृहकार्य देते हैं। गुल्लू अपनी कॉपी में एक 'गुल्लक' का चित्र बनाकर लाता है। मास्टरजी इसे आधार बनाकर आगे बढ़ जाते हैं। इस प्रकार षिक्षण विधि एवं षिक्षा मनोविज्ञान के धरातल पर यह उपन्यास सार्थक बन पड़ा है।

'वीर की वीरता' बाल उपन्यास में कोरोना महामारी के ढलते दौर में घर लौटते पैदल यात्रियों की दीनता का चित्रण इस प्रकार हुआ है–

''चालणियां मांय बूढ़ा, लुगायां, टाबर भी हा। दोरा–सोरा आपरै गांव पूगणो चावता। केई ठौड़ लोगां सेवा रो बंदोबस्त करयोड़ो हो, इण खातर गुजारो हुवतो। कठैई खाणो, कठैई चाय, कठैई पाणी तो कठैई सोवण री सेवा ही।

इण माड़ी टेम मांय सै सूं बेसी सेवा रो काम धरम आळी जगावां माथै हुयो। मिंदर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च आद मांय सेवा रा भंडार खुलगया। जात–पांत अर धरम रो भेद मिटग्यो हो। हरेक रै मन मांय मिनख नैं बचावण री हूंस ही। इणी हूंस लोगां नै सेवा खातर त्यार करया हा।

वीर अर उणरै भायलां नैं सेवा करण री चावना ही, इण खातर बै भी सड़कां माथै आवता अर जकी सेवा हुय सकती, बा करता। थाक्योड़ै लोगां रा पग दबावता। किणी नैं पाणी पावता। और तो बां कनै कीं हो नीं, इण खातर सरीर सूं जको हुय सकतो हो बो करण मांय लाग्योड़ा रैया।'' (पृ. 38)

इसी प्रकार उपन्यास में अन्यत्र भी कोरोना काल की विभीषिका के दिल दहलाने वाले सजीव चित्रों द्वारा तत्कालीन वातावरण की प्रस्तुति की गई है।

मधु आचार्य जी ने सभी बाल उपन्यासों में कथावस्तु एवं बाल पात्रों के ही अनुकूल सहज बोधगम्य वातावरण के रोचक चित्र खींचे हैं।

बाल उपन्यासों में निहित उद्देष्य :–

मधु आचार्य 'आषावादी' के समस्त बाल उपन्यासों का मूल ध्येय तो बालोपयोगी सहज बोधगम्य उपन्यास प्रस्तुत करते हुए उन्हें समसामयिक मुद्दों के प्रति सजग बनाना ही है तथापि प्रत्येक बाल उपन्यास के पीछे कथानक के अनुरूप अन्य उद्देष्य भी अन्तर्विष्ट है। यह बात उनकी कहानियों में भी साफ झलकती है। उनकी कहानी 'विद्रोह' में पारिवारिक दायित्व बोध का संकेत करते हुए विद्रोही बालक के बाल मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी का उद्देष्य बच्चों में सही–गलत के चुनाव और गलत बात के प्रति मुखर प्रतिरोध की भावना उद्दीप्त करना है।

'अपना होता सपना' बाल उपन्यास के द्वारा लेखक हम बड़ों से यह अपेक्षा रखता है कि बच्चों को यथाषीघ्र वर्तमान हालात से परिचित करवा देने में ही समझदारी है। आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त परिवार मीडिया द्वारा परोसे जा रहे रंगीन सपनों के षिकार हैं। यहां उपन्यासकार चाहता है कि हम समझ जाए कि बच्चों के सपने टूटने से पहले उन्हें यथार्थ समझा दें। वास्तव में यांत्रिक होते मानव समाज के बीच बाल साहित्य के रचनाकारों को सुकोमल बचपन की रक्षा करनी है।

'चींटी से पर्वत बनी पार्वती' बाल उपन्यास के पीछे लेखक का उद्देष्य स्पष्ट है। जिस प्रकार पिता की अकाल मौत के बाद भी पार्वती प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझकर आगे बढ़ती है, उपन्यासकार अपने बाल पाठकों को जैसा ही जुझारू और हिम्मत का धनी बनाना चाहता है।

'षेखर की शोहरत' बाल उपन्यास में लेखक बताना चाहता है कि जन्मजात विकलांग होने पर भी शेखर जैसे बच्चे दादी के संस्कारों पर चलकर बोर्ड परीक्षा में मैरिट में स्थान बना सकते हैं। उपन्यासकार ऐसे बच्चों में हीनताबोध को दूर करने एवं परिवारजन के प्रति असीम प्रेमभाव का संदेष देने में सफल रहा है।

'उम्र से आगे' उपन्यास में लेखक का उद्देष्य किषोर बालकों में घर–परिवार के उत्तरदायित्वों को बखूबी निर्वहन की प्रेरणा देना रहा है।

'सीमा सलीब पर' बाल उपन्यास में नन्हीं बालिका सीमा देखती है कि उसकी माँ दिनभर बादाम छीलने की मजदूरी का काम करती है, लेकिन एक भी बादाम नहीं खाती है, क्योंकि टीचर ने बताया था– मांगकर नहीं खाना चाहिए। सीमा यह भी देखती है कि हर महीने पापा एक निष्चित रकम सेठ रतनलाल को मकान किराया देने जाते हैं, क्योंकि उसके ताऊजी ने पुष्तैनी मकान हड़प रखा था। सीमा पढ़ लिखकर वकील बन जाती है और मुकदमा जीतकर पिताजी को हक दिलवाती है। यह उपन्यास बच्चों को षिक्षा के माध्यम से अपने हक प्राप्त करने की सीख देता है।

'गुल्लू री गुल्लक' एक राजस्थानी बाल उपन्यास है जिसके माध्यम से लेखक अल्प बचत की आदत डालने का महत्त्व समझाना चाहता है। उपन्यास में मास्टरजी और बच्चों की बातचीत का यह अंष इसी उद्देष्य की घोषणा करता प्रतीत होता है–

''स्याबास। म्हनैं भरोसो है थांरै माथै। अेक दूजी बात कैवणी चावूं। इण बचत रो थोड़ो हिस्सो पुन्न रै काम मांय उपयोग करणो चाईजै। किणी गरीब री मदद सारू। किणी री पढाई सारू। किणी री तबीयत बिगड़ै तो उणरै इलाज खातर। जे घर मांय किणी तरै री जरूरत पड़ै तो माँ–बाप री मदद सारू बचत करणी चाईजै। इणरो आछो उपयोग मदद है। इण खातर बचत अर मदद रो सुभाव बणाय लो। सगळा इयां करसी तद सगळा सागै आगै बधसी।

मास्टर जी री बात छोरां नैं घणी दाय आयी। मन मांय तय कर ली कै आज सूं ई बचत करसां।'' (पृ. 23)

'वीर री वीरता' उपन्यास लेखन के पीछे लेखक का उद्देष्य महामारी के भीषण दौर में गम्भीर सतर्कता बरतते हुए पीड़ित जन की सेवा सुश्रूषा और भोजनपानी के लिए चंदा जुटाकर व्यवस्था करने वाले वीर बालकों की मंडली के माध्यम से सेवा का पाठ पढ़ाना ही है।

स्पष्ट है कि मधु आचार्य ने प्रत्येक बाल उपन्यास में अपने महत्त्वपूर्ण उद्देष्यों की सिद्धि में सफलता अर्जित की है।

बाल उपन्यासों में भाषा शैली :–

मधु आचार्य के बाल उपन्यासों में शैली वैविध्य देखने को मिलता है। अनेक उपन्यासों के तो शीर्षकों में ही काव्योपम सुरभि महकती है। शीर्षक 'अपना होता सपना' में अनुप्रास छटा छलकती है तो 'चींटी से पर्वत बनी पार्वती' शीर्षक अपने आप में प्रतीकात्मक एवं प्रेरकसूत्र है।

'षेखर की शोहरत' उपन्यास में अधिकांषतया संवाद शैली का प्रयोग हुआ है लेकिन कहीं–कहीं स्वयं उपन्यासकार ने विवरणात्मक अथवा वर्णनात्मक शैली के द्वारा पाठकों की जिज्ञासावर्धन का काम किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

''बच्चा अब पाँच साल का हो गया था। उसका नाम शेखर रखा था। अब तो शेखर गांव की स्कूल भी जाने लग गया। अपनी बातों से वो दादी का खूब दिल बहलाता। उसे खूब हंसाता। अपने हंसमुख स्वभाव के कारण उसने भी हरिया की तरह गांव के सब लोगों का दिल जीत लिया था। स्कूल में भी वह षिक्षकों और छात्रों का चहेता बना हुआ था। पढ़ने में बहुत होषियार था। उसे जो भी पढ़ाया जाता दूसरे दिन उसे पूरा कंठस्थ कर लेता। अपने छोटे–छोटे हाथों के बीच वह पैंसिल रखता और कॉपी पर लिख लेता। अपने आप में यह बड़ा चमत्कार था। इस तरह से गांव वालों ने किसी को लिखते हुए नहीं देखा था तो उनके लिए यह कौतूहल का विषय था। सब अचंभित होकर उसे लिखते हुए देखते थे। शेखर अपनी इस कमी को भूल अपने सभी काम खुद करता था।

''रूपा कई बार कहती।

– तू बैठ, मैं अपने हाथ से खाना खिलाती हूँ।

– नहीं मैं खुद खाऊंगा।'' (पृ. 30)

'उम्र से आगे' उपन्यास में छोटे–छोटे संवादों की भरमार है, लेकिन इनमें यथास्थान लोकोक्ति, कहावतों, मुहावरों के द्वारा रोचकता बढ़ जाती है। कहीं–कहीं वक्रोक्ति और उक्ति वैचित्र्य भी देखते ही बनता है। विकलांग पिता को अपनी कमाई से हारमोनियम का गिफ्ट देने के बाद पिता के साथ मैरिट होल्डर भंवर का वार्तालाप द्रष्टव्य है–

– ''आप ही बता दो कि मैं सही हूँ या गलत।

– गलत तूं नहीं, गलत मैं था।

– आप फिर गलत जवाब दे रहे हैं। मेरी समझ और लक्ष्य आप हैं, यदि वो गलत होते तो मेरा सफल होना संभव ही नहीं था।

– आजकल तूं तर्क बहुत करने लग गया।

– दसवीं पास हो गया हूँ ना।

इस बात पर तीनों ही हंस पड़े।'' (पृ. 61)

'सीमा सलीब पर' बाल उपन्यास में नन्हीं बालिका सीमा अपनी माँ को बताती है कि वह बड़ी होकर अफसर नहीं बल्कि वकील बनना चाहती है। 'माँ' के प्रष्न 'क्यों' का जवाब इस रोचक संवाद में मिल जाता है–

– ''ठीक है माँ, मैं अफसर नहीं बनूंगी।

– हां, बिल्कुल मत बनना।

– तो अब बता, बड़ी होकर क्या बनूं?

– जो तेरा मन है, वह बन।

– तूं वो बात मान लेगी ना।

– हां, तेरी बात तो मानूंगी ही। मुझे तो कोई ज्ञान नहीं है।

– फिर तूं वही मान जो मैं कहूं।

– मान लूंगी। अब तूं ही बता दे कि क्या बनेगी।

– कोर्ट में काम करने वाली?

– हां।

– क्यों?

– वकील का कभी ट्रांसफर नहीं होता। सदा तुम्हारे सामने रहूंगी।

– यह बात तो ठीक है।

– गरीबों की मदद भी कर लूंगी।

– कैसे?

– जिनको न्याय नहीं मिल रहा, उनको न्याय दिलाऊंगी।

– अच्छा काम है ये।

– जिन गरीबों के पास पैसा नहीं होगा, उनके मुकदमे फ्री लड़ूंगी।

– तुझे बहुत पुण्य मिलेगा बेबी।

– तुम्हे कैसे मालूम?
– एक दो बार मैं तेरे पापा के साथ कचहरी गई थी, वहाँ देखती थी, कई लोग वकीलों के आगे हाथ जोड़े रहते थे, कई बेचारे रोज चक्कर ही निकालते रहते थे भूखे प्यासे।'' (पृ. 53)

विभिन्न बाल उपन्यासों के कथोपकथनों के प्रतिनिधि उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि इनमें बालसुलभ जिज्ञासा, कौतूहल भरे सवालों की बहुलता है। बच्चे सवाल–दर–सवाल पूछते जाते हैं। अनेक प्रसंगों में तो सूरदास के भक्ति साहित्य में यषोदा–कन्हैया वाली वार्ता शैली का सहसा स्मरण हो आता है। इन उपन्यासों के कथोपकथन में वात्सल्य रस भी छलक उठा है।

मधु आचार्य के बाल उपन्यासों के शीर्षकों की भाषा ही अपने आप में चारुता से भरपूर है। इनमें अनुप्रास छटा के अलावा सभंग यमक अलंकार और प्रतीकात्मकता का दर्षन होता है। इन शीर्षकों पर पुनः दृष्टि डालना समीचीन होगा– 'अपना होता सपना' (सभंग यमक), 'वीर की वीरता' (सभंग यमक), 'गुल्लू री गुल्लक' (सभंग यमक) आदि। 'चींटी से पर्वत बनी पार्वती' (सभंग यमक एवं प्रतीकात्मकता), 'सीमा सलीब पर' (अनुप्रास), 'षेखर की शोहरत' (अनुप्रास) आदि।

विभिन्न बाल उपन्यासों में मुहावरों–कहावतों का रोचक प्रयोग देखा जा सकता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है–

(क) बठे जीवण रो तो कीं जतन हुसी। (वीर री वीरता, पृ. 38)
(ख) आपकी बेटी के सामने मैंने आज हथियार डाल दिए। (सीमा सलीब पर, पृ. 39)
(ग) उसकी आँखों में पानी आ गया था। (सीमा सलीब पर, पृ. 33)

विभिन्न बाल उपन्यासों में प्रसंगानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। यथा– 'साइट खुली तो शेखर ने उसमें अपने नम्बर फीड किए। अब रिजल्ट सामने था।' (षेखर की शोहरत, पृ. 42) यहां परीक्षा परिणाम के दौरान बोलचाल में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

इसी प्रकार मधु आचार्य ने अपने बाल उपन्यासों में कथानक की मांग अनुसार यथोचित भाषा शैली के द्वारा पठनीयता को बहुगुणित कर दिया है।

सन्दर्भ सूची :–

1. बक्षी, आनन्द ; हिन्दी बाल साहित्य का अनुषीलन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, 2016, पृ. 13
2. अपनी माटी (त्रैमासिक ई–पत्रिका), चित्तौड़गढ़, अंक–49, अक्टू–दिसंबर 2023 से उद्धृत
3. भंडारी, विमला ; दी ऑरबिट आई : मंजूरानी और मूर्ति चोर, प्रकाषन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली, 2023, पृ. सं. 05
4. आचार्य, मधु ; शेखर की शोहरत, गायत्री प्रकाषन, बीकानेर, 2020, पृ. 32
5. आचार्य, मधु ; उम्र से आगे, सूर्य प्रकाषन मंदिर, बीकानेर, 2017, पृ. 45
6. आचार्य, मधु ; सीमा सलीब पर, गायत्री प्रकाषन, बीकानेर, 2019, पृ. 32
7. आचार्य, मधु ; गुल्लू री गुल्लक, गायत्री प्रकाषन, बीकानेर, 2018, पृ. 30
8. आचार्य, मधु ; वीर री वीरता, गायत्री प्रकाषन, बीकानेर, 2021, पृ. 38
9. आचार्य, मधु ; शेखर की शोहरत, पृ. 30
10. आचार्य, मधु ; सीमा सलीब पर, पृ. 33
11. आचार्य, मधु ; वीर री वीरता, पृ. 38
12. दईया, डॉ. नीरज ; मधु आचार्य 'आषावादी' के सृजन सरोकार, सूर्य प्रकाषन मंदिर, बीकानेर, 2017, पृ. सं. 46
13. आचार्य, मधु ; गुल्लू री गुल्लक, पृ. 23
14. आचार्य, मधु ; शेखर की शोहरत, पृ. 30
15. आचार्य, मधु ; उम्र से आगे, पृ. 61
16. आचार्य, मधु ; सीमा सलीब पर, पृ. 53
17. आचार्य, मधु ; वीर री वीरता, पृ. 38
18. आचार्य, मधु ; सीमा सलीब पर, पृ. 39
19. आचार्य, मधु ; सीमा सलीब पर, पृ. 33
20. आचार्य, मधु ; शेखर की शोहरत, पृ. 42